राष्ट्रवादी इतिहासलेखन का गांधीवादी दृष्टिकोण और कतिपय गांधीवादी इतिहासकार

डॉ. विक्रमसिंह अमरावत

भारत में राष्ट्रवादी इतिहासलेखन उपनिवेशवादी इतिहासकारों के प्रत्युत्तर में प्रारम्भ हुआ। उपनिवेशवादी इतिहासकारों के द्वारा प्रस्थापित अवधारणाओं को चुनौती देते हुए राष्ट्रवादियों ने नए स्त्रोतों की मदद से नई व्याख्याएँ की और भारत के इतिहासलेखन में सकारात्मक हस्तक्षेप किया। राष्ट्रवादी इतिहासकारों को प्राच्यवादियों के इतिहासलेखन ने मदद की और भारत के प्राचीन इतिहास के गौरवशाली पक्ष को बहुत ही अच्छी तरह से उजागर भी किया। उपनिवेशवादी इतिहासकारों के पाश्चात्यवादी समूह ने भारतीय इतिहास का सांप्रदायिक काल विभाजन किया, भारतीय इतिहास में निरंकुश राजतंत्र की अवधारणा को स्थापित किया। भारतीय ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, तथा कला आदि की एक नकारात्मक छवि को स्थापित करने के प्रयास किये। साथ ही भारतीय समाज और राजनीति को अस्पष्टता और गैर-संरचनात्मकता से युक्त सिद्ध करने के प्रयास किये गए। भारतीय राजनीति को धार्मिक संघर्षों पर आधारित बताया, इतना ही नहीं बल्कि इतिहास और इतिहासलेखन के प्रति भारतीय अज्ञानता के सिद्धान्त प्रतिपादित किये।[1] प्राच्यवादी समूह के इतिहासकारों ने यद्यपि भारतीय अतीत की गौरवशाली छवि को प्रस्तुत किया लेकिन सांप्रदायिक काल विभाजन का समर्थन करते हुए मध्यकालीन भारत के इतिहास की प्रस्तुति पाश्चात्यवादियों के अनुसरण में ही की। इलियट एवं डाउसन ने मध्यकालीन भारत के इतिहास को प्रस्तुत करते समय इसी सांप्रदायिक दृष्टि को पुष्ट किया।[2]

यहाँ तक कि जेम्स टॉड जैसे प्राच्यवादी इतिहासकार ने भी राजपूत-मुगल संबंधों को सहयोग की अपेक्षा संघर्ष के संदर्भ में अधिक देखा। यहाँ तक कि ब्रिटिश सत्ता को राजपूतों के सहयोगी के रूप में स्थापित करने के लिये मुगलों और मराठों को राजपूतों के गौरवशाली अतीत के शत्रु के रूप में प्रस्तुत किया।[3] भारतीय अतीत को अपनी सत्ता की वैधता को सिद्ध करने के लिये, सत्ता के सशक्तिकरण और उसके स्थायित्व के लिये व्याख्यायित करने के उद्देश्य से विकसित हुए उपनिवेशवादी

दृष्टिकोण को चुनौती देते हुए राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने उन सभी अवधारणाओं को एक-एक कर के चुनौती दी और समकालीन इतिहासलेखन की पद्धति के आधार पर उनको खारिज करने का प्रयास किया।[4]

उपनिवेशवादी इतिहासलेखन के प्रति यह जवाबी कार्यवाही राष्ट्रवादी इतिहासकारों के द्वारा की गई थी। यह राष्ट्रवादी इतिहासलेखन भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के समानान्तर चला और राष्ट्रीय आन्दोलन की बहुविमीयता का एक आयाम बना। उपनिवेशवादी इतिहासलेखन के विरूद्ध हुई प्रतिक्रिया में जो इतिहासकार अपना योगदान दे रहे थे उनमें से अधिकतर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से राष्ट्रीय आन्दोलन में अलग-अलग स्वरूप में सक्रिय थे, राष्ट्रीय आन्दोलन का हिस्सा थे। दादाभाई नौरोजी, बंकिमचंद्र चटर्जी, बाल गंगाधर तिलक, विनायक दामोदर सावरकर, लालालाजपत राय, रमेश चंद्र दत्त, के.पी. जायसवाल, राधाकुमुद मुखर्जी, रामकृष्ण गोपाल भंडारकर, बालगंगाधर तिलक, जदुनाथ सरकार, राजेन्द्र लाल मित्र, विश्वनाथ काशीनाथ रजवाड़े, पांडुरंग वामन काणे, हेमचंद्र रायचौधरी, हरप्रसाद शास्त्री, गोविन्द सखाराम सरदेसाई, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, मुंशी देवी प्रसाद जैसे अनेक इतिहासकार भारतीय पक्ष के राष्ट्रवादी इतिहासलेखन के प्रति अपना योगदान दे रहे थे। इन इतिहासकारों के नेतृत्व में राष्ट्रवादी इतिहासलेखन में भी हमें विभिन्न धाराएँ देखने को मिलती है। दादाभाई नौरोजी ने आर्थिक राष्ट्रवाद की अवधारणा को स्थापित किया तो के.पी. जायसवाल और जदुनाथ सरकार के इतिहासलेखन ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा का विकास किया, वहीं विनायक दामोदर सावरकर ने उग्र राष्ट्रवाद का प्रतिनिधित्व किया। जैसे-जैसे राष्ट्रीय आन्दोलन आगे बढ़ रहा था और उसमें विविध तरह से संघर्ष विकसित हो रहे थे, राष्ट्रवादी इतिहासलेखन पर भी उन प्रवृत्तियों का प्रभाव दिखलाई पड़ता है।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप गांधी के प्रवेश के पश्चात बदला और यह बदलाव सिर्फ सक्रिय आन्दोलन पर ही देखने को नहीं मिलता बल्कि राष्ट्रवादी इतिहासलेखन पर भी इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अहिंसा, कौमी-एकता, सामाजिक समरसता जैसे निष्क्रिय-राजनीतिक साधनों का उपयोग करते हुए राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा दी और उसे सही मायने में जन-आन्दोलन बनाया। गांधी का नेतृत्व प्रत्यक्ष राजनीति तक सीमित नहीं रहा बल्कि राष्ट्रीय आन्दोलन के प्राय: सभी पहलुओं तक उसका प्रत्यक्ष

प्रभाव पड़ा। गांधी ने प्रत्येक स्तर पर औपनिवेशिक विमर्श को खारिज किया। यहाँ तक कि 'इतिहास' की अवधारणा के संदर्भ में भी उन्होंने इसे चुनौती देते हुए अपनी इसे औपनिवेशिक अवधारणा बताया और समकालीन प्रचलित 'इतिहास' की अवधारणा को ही नकार दिया।[5] यहाँ तक कि राष्ट्र और इतिहास के जिस अनिवार्य संबंध को औपनिवेशिक विमर्श ने स्थापित करने का प्रयास किया था उसको नकारते हुए कह दिया कि, वह राष्ट्र अधिक सुखी है जिसका कोई इतिहास नहीं है।[6] गांधी का इतिहास के प्रति यह नजरिया मूलत: इतिहास की औपनिवेशिक अवधारणा के विरूद्ध खड़ा किया गया एक वैकल्पिक विमर्श था जो भूतकाल और वर्तमान के संबंध को एक भिन्न दृष्टि से देखता था।

भारत में हो रहे राष्ट्रवादी इतिहासलेखन ने भी यद्यपि औपनिवेशिक इतिहासलेखन के विरूद्ध प्रतिक्रिया दी किन्तु उन्होंने समकालीन प्रचलित 'इतिहास' की अवधारणा को स्वीकार करते हुए अपने जवाब तैयार किये। राष्ट्रवादी इतिहासलेखन की मुख्य विशेषता औपनिवेशिक इतिहासलेखन के समक्ष राष्ट्रवादी विमर्श को खड़ा करना था इसलिये प्रारम्भ में तो प्रचलित अवधारणाओं का प्रत्युत्तर ही राष्ट्रवादी विमर्श की मुख्य विषय-वस्तु रहा। भारत के प्राचीन इतिहास में स्वर्णयुग को खोजना, भारतीय शासन पद्धतियों की प्राचीनता और समृद्ध परंपरा को स्थापित करना, भारत में राष्ट्रीय चेतना की प्राचीनता को स्थापित करना ही मुख्य धारा के राष्ट्रवादी इतिहासलेखन का उद्देश्य था। गांधी के द्वारा 'इतिहास' को नकार देने के विमर्श में प्रत्यक्ष रूप से औपनिवेशिक इतिहास की आलोचना थी तो परोक्ष रूप से वो इतिहासलेखन की राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया को भी इस बात से सावधान कर रहे थे कि औपनिवेशिक इतिहास के विरूद्ध वो जो इतिहासलेखन कर रहे हैं वो कहीं ना कहीं उनकी ज्ञानमिमांसा और पद्धति का स्वीकरण भी है। इसलिये उन्होंने भूतकाल के महत्व को तो स्वीकार किया लेकिन उसके वर्तमान से संबंध के विमर्श के रूप में विकसित समकालीन 'इतिहास' को ही नकार दिया।

इस संदर्भ में प्रथम दृष्टया तो गांधी इतिहास के विरूद्ध विमर्श खड़े करते हुए दिखाई देते हैं लेकिन साथ ही, वो भूतकाल के वर्तमान से संबंध को स्थापित करने के साधन के रूप में जिस अवधारणा को प्रस्तुत करते हैं, वह भारतीय ज्ञान परंपरा में अतीत के बोध से प्रभावित है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं में इतिहास-पुराण के रूप में विकसित जिस अवधारणा को औपनिवेशिक विमर्श में अनैतिहासिक माना

गया और जिसे मिथक के रूप में प्रस्तुत करके 'इतिहास' से एकदम अलग कर दिया गया था, गांधी उसको अपने अतीत-बोध और उसके वर्तमान से संबंध का आधार स्वीकार करते हैं। इस प्रकार गांधी राष्ट्र और राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में औपनिवेशिक इतिहास की अवधारणा को तो नकारते हैं किन्तु अतीत के बोध के महत्व को स्थापित करते हैं।

इस स्वरूप में यह कहा जा सकता है कि वो कहीं ना कहीं समकालीन राष्ट्रवादी इतिहासलेखन के विमर्श में अप्रत्यक्ष रूप से अपना योगदान दे रहे थे। औपनिवेशिक इतिहास के विमर्श के संदर्भ में गांधी के विमर्श का विश्लेषण करते हुए प्रेम आनन्द मिश्र का एक महत्वपूर्ण लेख है जिसमें उन्होंने बहुत ही विस्तार से 'इतिहास' के संदर्भ में गांधी के विचारों की समीक्षा प्रस्तुत की है और निष्कर्ष के रूप में वे मानते हैं कि गांधी ने औपनिवेशिक इतिहास की उस अवधारणा, जो कि द्वैत पर आधारित थी, की अपेक्षा भारतीय अतीत और वर्तमान के संबंध को समझने और उसमें निरंतरता को स्थापित करने के लिये मिथक को महत्वपूर्ण माना। गांधी के लिये अतीत के वर्तमान से संबंध में महान घटनाओं और महान व्यक्तित्वों के योगदान की अपेक्षा आत्म-निरीक्षण, नैतिकता और व्यक्तिगत आचरण के लिये कुछ महत्वपूर्ण होना आवश्यक है। इस प्रकार गांधी इतिहास की समकालीन प्रचलित अवधारणा को खारिज करते हैं। प्रेम आनन्द मिश्र के अनुसार गांधी समकालीन राष्ट्रवादी इतिहासकारों के उन प्रयासों को भी खारिज कर रहे थे जो अतीत के नाम पर भारतीय समाज को धर्म, जाति या भाषा के आधार पर बाँट रहे थे।[7]

इस कथ्य में प्रथम दृष्टया ये प्रतीत होता है कि गांधी ने जिस तरह औपनिवेशिक इतिहास की अवधारणा को नकार दिया, ठीक वैसे ही, राष्ट्रवादी इतिहासलेखन के विमर्श को भी अस्वीकृत कर दिया। किन्तु, वास्तव में ऐसा नहीं था। गांधी ने राष्ट्रवादी इतिहासलेखन को खारिज नहीं किया था बल्कि उसको औपनिवेशिक विमर्श के दुष्चक्र से मुक्त करने का एक उपाय सुझाया था। सन् 1920 में गूजरात विद्यापीठ की स्थापना के समय गांधी स्वयं उच्च शिक्षण में अतीत के अध्ययन की महत्ता को स्वीकार करते हुए गूजरात विद्यापीठ में भारतीय संस्कृति और अतीत के अध्ययन के लिये समर्पित 'पुरातत्त्व मंदिर' की स्थापना करते हैं। यहाँ तक कि गांधी दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्रह के अपने संघर्ष को लिपिबद्ध करते हैं और बाद में अपनी आत्मकथा में भी अपने जीवन के उन अनुभवों को लिपिबद्ध

करते हैं जो उनके जीवन में निर्देशात्मक सिद्धान्तों के लिये सहायक रहे। गांधी के लिये अतीत राजनीतिक संघर्षों का लेखा-जोखा और उस आधार पर श्रेष्ठता-नेष्ठता के निर्णय का साधन नहीं था। गांधी अतीत के इस द्वैत को ही खारिज कर रहे थे और इसलिये उन्होंने अतीत को सृजन की प्रक्रिया के रूप में देखा जिसमें संघर्ष की अपेक्षा व्यक्ति के द्वारा किये गए कार्यों में शांति, सहयोग, सद्भाव, सर्जनात्मकता, तथा रचनात्मकता आदि को देखा। राजनीतिक श्रेष्ठता के द्वैत को नकार कर मानव के अतीत को संस्कृति के आईने से देखा।

राष्ट्रीय आन्दोलन और अतीत की महत्ता के इस संबंध में गांधी के विचारों ने राष्ट्रवादी इतिहासलेखन के विमर्श में भी अपना योगदान दिया। यद्यपि अभी तक यही माना जाता रहा है कि गांधी 'इतिहास' को खारिज करते है इसलिये राष्ट्रवादी इतिहासलेखन के विमर्श के विकास में गांधी का कोई रचनात्मक या सकारात्मक प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष योगदान नहीं है। किन्तु यह मान्यता गांधी के विचारों के एक-पक्षीय विश्लेषण पर आधारित है। यदि हम समग्रता में उसे देखेंगे तो पाएँगे कि वास्तव में गांधी ने इतिहास को नहीं बल्कि उस औपनिवेशिक विमर्श को खारिज किया है जो उस समय 'इतिहास' को परिभाषित कर रहा था। साथ ही उसके विकल्प के रूप में अतीत और वर्तमान के बीच संबंधों को समझने और व्यक्त करने के लिये परंपराओँ और मिथकों को महत्व दिया। राष्ट्रवादी इतिहासकार भी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं के महत्व को उजागर कर रहे थे और भारत के अतीत को भारतीय दृष्टि से, भारतीय संदर्भ से समझने पर जोर दे रहे थे।[8] इस संदर्भ में गांधी अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रवादी इतिहासलेखन के एक पक्ष को सैद्धान्तिक मजबूती देने का प्रयास कर रहे थे। राष्ट्रवादी इतिहासलेखन के विमर्श में गांधी के योगदान को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिये गांधी के सहयोगियों के द्वारा भारतीय अतीत के संदर्भ में किये गए लेखन कार्य की समीक्षा करना समीचीन होगा। यहाँ हम गांधी के द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में स्थापित गूजरात विद्यापीठ के पुरातत्त्व मंदिर की स्थापना और उसके अंतर्गत किये गए भारतीय विधा के विद्वानों के कार्यों और प्रकाशनों की समीक्षा राष्ट्रवादी इतिहासलेखन के संदर्भ में करेंगे। गूजरात विद्यापीठ की स्थापना और उसकी प्रत्येक गतिविधि गांधी के विचारों का आईना था। विद्यापीठ की स्थापना के समय जो भी विद्वान विद्यापीठ से जुड़े, वो गांधी और उनके विचारों के प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं। उन विद्वानों के द्वारा किये गए

कार्यों को गांधी की विचारधारा से संलग्न माना जा सकता है। पुरातत्त्व मंदिर की स्थापना के उद्देश्य और उसके अंतर्गत किये गए कार्य, ज्ञान के क्षेत्र में गांधीय हस्तक्षेप था। पुरातत्त्व मंदिर के उद्देश्यों से ही स्पष्ट हो जाता है कि यह विभाग भारतीय अतीत के बोध की गांधी की अवधारणा का प्रतिनिधित्व कर रहा था और साथ ही समकालीन राष्ट्रवादी इतिहासलेखन की एक अलग धारा के रूप में विकसित हो रहा था। पुरातत्त्व मंदिर के उद्देश्यों में लिखा गया था कि, 'हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास और विशेष तौर पर गुजरात के साहित्य, कला, धर्म, दर्शनशास्त्र आदि विषयों पर अनुसंधान और प्रकाशन करना, हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास, साहित्य, दर्शनशास्त्र का और संस्कृत, पाली आदि भाषाओं का शिक्षण प्रदान करना, संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश, पुरानी गुजराती, फारसी और अरबी आदि भाषाओं में लिखे गए दुर्लभ ग्रन्थों का नवीन पद्धति से संशोधित प्रकाशन करना।'[9] इन उद्देश्यों के साथ पुरातत्त्व मंदिर की स्थापना की गई और इसकी गतिविधियाँ संचालित की गई। पुरातत्त्व मंदिर की प्रबंध समिति में मुनि जिनविजय आचार्य थे, रामनारायण विश्वनाथ पाठक और रसिकलाल छोटालाल पारीख मंत्री थे और अन्य सदस्यों में रामचंद्र बलवंत आठवले, पंडित सुखलालजी और दत्तात्रेय बा. कालेलकर थे। इनके अतिरिक्त पुरातत्त्व मंदिर के द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों और मंदिर की शोध पत्रिका 'पुरातत्त्व' में लिखे जाने वाले लेखों के द्वारा अन्य विद्वान भी गांधी-विचार आधारित इतिहास के विमर्श से जुड़े, जिनमें नरहरी पारीख, मुनि पुण्यविजय, अबु जफर नदवी, बेचरदास दोषी, भगवान लाल इंद्रजी, धर्मानंद कोसांबी, नारायण खरे, तथा दुर्गाशंकर शास्त्री जैसे नाम प्रमुख रूप से लिये जा सकते हैं। इन कतिपय इतिहासकारों के द्वारा पुरातत्त्व मंदिर के लिये किये गए लेखन और संपादन कार्य को गांधी-विचार आधारित कहा जा सकता है। इनके अतिरिक्त गांधीजी के निजी सचिव रहे महादेव देसाई के लेखन में भी इतिहास बोध के दर्शन होते हैं। यहाँ तक कि उनको हम गांधी के इतिहासकार के रूप में भी देख सकते हैं। महादेव देसाई ने न सिर्फ गांधी के दैनिक कार्यों के विवरण तैयार किये[10] बल्कि गांधी के राष्ट्रीय आंदोलन की कतिपय घटनाओं का लेखा-जोखा भी तैयार किया जो कि समकालीन इतिहास के रूप में देखा जाता है।[11] गांधी के साथ अपना आधा जीवन व्यतीत कर देने वाले महादेव देसाई को गांधी और गांधी विचार का प्रवक्ता कहा जा सकता है। उपर्युक्त सभी इतिहासविद प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय आंदोलन से भी जुड़े

हुए थे और उनके द्वारा जो इतिहास संबंधित लेखन कार्य किया गया वो राष्ट्रवादी इतिहासलेखन की धारा को ही आगे बढ़ा रहा था और पुष्ट कर रहा था।

पुरातत्त्व मंदिर की स्थापना के विषय मे दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर (काका कालेलकर) ने अपने लेख में उस पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने का प्रयास किया है, जिसके कारण पुरातत्त्व मंदिर की स्थापना की गई थी। अपने लेख की शुरूआत में ही वह अतीत के वर्तमान से संबंध और राष्ट्रीय चेतना में उसके योगदान की चर्चा करते है। वह लिखते है कि,

कोई समाज अपनी वर्तमान स्थिति से जब असंतुष्ट हो जाता है तब उसकी दृष्टि भूतकाल और भविष्य की तरफ जाती है और जिस स्तर तक वो इन दोनों दूरवर्ती काल के दर्शन कर लेता है उस स्तर का उसमें उत्साह और प्राण आ जाता है..... भूतकाल, ये हमारी पूंजी है, उसका समुचित उपयोग किया जाए तो गुजर गए होने के बावजूद वो हमेशा हमको स्फूर्ति प्रदान करता रहता है, आत्मपरिचय करवाते हुए भविष्य को स्पष्ट रूप से देखने की शक्ति प्रदान करता है।[12]

कालेलकर अतीत और वर्तमान के संबंधों को अनिवार्य मानते हुए उसको भविष्य का आधार बताते हैं और इस पूरे समीकरण को भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की मूल भावना से जोड़ कर देख रहे हैं। वह स्पष्ट करते है कि, सदैव क्रांति और चेतना के जागरण में अतीत-बोध एक अनिवार्य तत्त्व की तरह रहा है। राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने जिस प्रकार से उपनिवेशवादी इतिहासलेखन को भारतीय आत्मगौरव के मार्ग में कंटक की तरह प्रस्तुत किया ठीक इसी तरह का विचार काका कालेलकर भी इस लेख में रखते हैं। उनके अनुसार अंग्रेजी शिक्षा और अंग्रेजी इतिहास की वजह से पढ़े-लिखे वर्ग में आत्मगौरव कमजोर हुआ, स्वतंत्रता के प्रति श्रृद्धा कमजोर हुई, सामाजिक एकता टूटी और हमारा पुरूषार्थ भटक गया।[13] लेकिन वह इस संदर्भ में राष्ट्रवादी इतिहासकारों के कार्य की भी टीका करते हुए लिखते है कि महज इतना कह देने से कि हम अतीत में बहुत ही अच्छे थे और हमारा सबकुछ श्रेष्ठ ही था, हमारा काम नहीं होगा। ये तो बस फिजूल का अभिमान है, खुद की हमेशा तारीफ ही करते रहना तो दुर्बलता की निशानी है। काका साहेब इस संदर्भ में कहते है कि, 'स्व' की सच्ची पहचान से ही स्वाभाविक आत्मप्रत्यय आएगा और उसी में राष्ट्र का प्राण बसता है।[14]

उपर्युक्त पृष्ठभूमि में 'गुजरात पुरातत्त्व मंदिर' की स्थापना गूजरात विद्यापीठ

के एक अंग के रूप में हुई थी। इसी से स्पष्ट होता है कि यह मूलत: राष्ट्रीय आंदोलन के सांस्कृतिक पहलू का प्रतिनिधित्व कर रहा था और राष्ट्रवादी इतिहासलेखन की वृहद परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। किन्तु यह हिस्सा इतिहासलेखन के मुख्यधारा के विमर्श में अपना स्थान नहीं बना पाया। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उपर्युक्त गांधी-विचार से प्रभावित अतीत के प्रवक्ताओं में से कदाचित ही कोई मुख्यधारा के इतिहासलेखन का हिस्सा रहा हो। यह भी संभव है कि इस प्रकार के कतिपय गांधीवादी इतिहासकार मुख्य रूप से क्षेत्रीय इतिहास को महत्व दे रहे थे और उस समय राष्ट्रवादी इतिहासलेखन की आवश्यकता प्रत्यक्ष और स्पष्ट रूप से राष्ट्र के इतिहास लिखने की थी न कि राष्ट्र के किसी खंड या हिस्से को लिख कर राष्ट्र की अवाधारणा को चुनौती देने की। राष्ट्रवादी इतिहासकार जहाँ एक तरफ राजनीतिक इतिहास को अधिक महत्व देते थे वहीं गांधीवादी इतिहासकारों ने धर्म, कला, तथा साहित्य आदि को अतीत और अतीत-बोध से जोड़ा। यहा तक कि उन्होंने मानव जीवन के सांस्कृतिक पहलू को ही अपने अतीत-बोध के विमर्श का अनिवार्य हिस्सा माना।

मुनि जिनविजय, जो कि पुरातत्त्व मंदिर के संस्थापक सदस्य रहे और जिनके मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में पहले दशक में पुरातत्त्व मंदिर की प्रवत्तियाँ संचालित की गई थी, को भी एक प्रमुख गांधीवादी इतिहासकार माना जा सकता है। मुनि जिनविजय ने गांधी से भेंट करने के पश्चात राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी की इच्छा जताई थी।[15] गांधी ने उनको राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान देने के लिये गूजरात विद्यापीठ में आकर काम करने का मार्ग बताया। गांधी के द्वारा सुझाए गए इस रास्ते पर मुनि जिनविजय चले और उन्होंने विद्यापीठ के अंतर्गत पुरातत्त्व मंदिर की स्थापना की और उसके बाद विद्यापीठ से ही अनेक प्रकाशनों से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े रहे। वह जैन साहित्य के प्रकांड विद्वान माने जाते थे किन्तु मूल रूप से वह भारतीय संस्कृति के अध्येता थे और गांधी भी मुनि जिनविजय के अतीत के प्रति नजरिये और उसकी खोज, प्रकटन एवं व्याख्या से प्रभावित हुए थे। इसी के पश्चात उन्होंने मुनिजी को गूजरात विद्यापीठ का हिस्सा बनने के लिये निमंत्रण दिया था। मुनिजी के द्वारा किये गए लेखन और संपादन के विशद कार्य पर गांधी के अतीत-बोध के संदर्भित विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। गांधी धार्मिक साहित्य को हमेशा से प्रधानता देते थे और उन्होंने भारतीय मिथकों को अतीत एवं वर्तमान के

बीच संबंध का एक प्रमुख कारक माना। पंडित सुखलाल, जो कि प्रज्ञाचक्षु थे, जैन धार्मिक साहित्य के प्रकांड पंडित थे। इसी प्रकार से धर्मानंद कौसांबी बौद्ध धर्म के विद्वान थे, अबु जफर नदवी इस्लाम धर्म के विद्वान थे, हरिहर भट्ट और केशव दफ्तरी ज्योतिषशास्त्र के विद्वान थे, नारायण खरे भारतीय संगीत के विद्वान थे, भगवानलाल इंद्रजी पुरातत्त्व के विद्वान थे, रसिकलाल पारीख संस्कृत के विद्वान थे।[16] उक्त अध्येता मुख्य रूप से सांस्कृतिक गतिविधियों को केंद्र में रखकर समय को समझते, व्यक्त करते और इस आधार पर देश की पहचान बनाने का प्रयास कर रहे थे।

जिस 'इतिहास' को गांधी खारिज कर देते हैं किन्तु अतीत और वर्तमान के बीच के संबंधों के प्रवक्ता के रूप में एक घटक की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं जो द्वैत और द्वन्द्वात्मक संबंधों पर आधारित न होकर रचनात्मक और सर्जनशील होते हुए वैयक्तिक से लेकर सामाजिक आत्मबोध का माध्यम है। गांधी की इसी विचारधारा को केंद्र में रखकर कतिपय भारतविदों ने अतीत को वर्तमान से जोड़ने में अपना योगदान दिया जो कि राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के लिये एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में किया गया एक महत्वपूर्ण प्रयास था। राष्ट्रवादी इतिहासलेखन की मुख्य धारा के इतिहासकारों से इतर गांधीवादी इतिहासकारों ने एक अलग ही मार्ग के द्वारा उपनिवेशवादी इतिहासलेखन के समक्ष अपनी प्रतिक्रिया दी। किन्तु इसमें महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि इन इतिहासकारों ने राष्ट्रवादी इतिहासलेखन की बहुविमीयता के एक पक्ष का प्रतिनिधित्व किया। यद्यपि यह पक्ष सबसे कम चर्चित अवश्य रहा किन्तु इसने राष्ट्रवादी इतिहास को पुष्ट करते हुए इस विमर्श को समृद्ध बनाया।

सन्दर्भ

1. डब्ल्यू. पेरेट रॉय, 'हिस्ट्री, टाईम, एंड नोलेज इन एन्शियेन्ट इंडिया', *हिस्ट्री एंड थ्योरी,* वॉल्यूम-38, नं.-3, अक्टूबर 1999, पृ. 310; दिनेश कुमार ओझा, 'अंडरस्टेंडिंग द आईडियाज़ एंड नोशन्स अबाउट एन्शियेन्ट इंडिया इन द अर्ली इम्पिरियलिस्टिक हिस्टोरियोग्राफी: ए न्यू पर्सपेक्टिव', *प्रोसिडिंग्स ऑफ द इंडियन हिस्ट्री कॉंग्रेस,* वॉल्यूम-68, 2007, पृ. 231; आर्थर एन्थोनी मेक्डोनेल, *ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर,* डी.एप्लेटन एंड कंपनी, न्यूयॉर्क, 1900, पृ. 10; एफ.ई. पार्जीटर, *एन्शियेन्ट इन्डियन*

हिस्टोरिकल ट्रेडिशन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1922, पृ. 2

2. हेनरी मैर्स इलियट एवं जॉन डाउसन ने 1867 से 1877 के बीच 'द हिस्ट्री ऑफ इंडिया, एज टोल्ड बाय इट्स ऑन हिस्टोरियन्स' नाम से आठ भाग प्रकाशित किये जिसमें तेरहवीं सदी से लेकर अठारहवीं सदी तक के मुस्लिम इतिहासकारों की रचनाओं का संक्षिप्त अनुवाद प्रकाशित किया था।

3. विक्रमसिंह अमरावत, 'कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की पुनर्समीक्षा की आवश्यकता', *राजस्थान हिस्ट्री कॉंग्रेस प्रोसिडिंग्स,* वॉल्यूम-XXX, जोधपुर, 2015, पृ. 548-549

4. राम शरण शर्मा, *भारत का प्राचीन इतिहास,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2019, पृ. 8-10

5. प्रेम आनन्द मिश्रा, 'ट्रुथ ट्रांसेन्ड हिस्ट्री, गांधीज रेस्पोन्स टू द कोलोनियल लॉजिक ऑफ हिस्ट्री एंड एलीगोरी ऑफ प्रोग्रेस', *विद्यापीठ,* अप्रैल-जून 2014, पृ. 41

6. वही, पृ. 39

7. वही, पृ. 51

8. रमेश चंद्र मजूमदार, 'आईडियाज़ ऑफ हिस्ट्री इन संस्कृत लिटरेचर', *हिस्टोरियन्स ऑफ इंडिया, पाकिस्तान एंड सिलोन* , संपा. सी.एच. फिलिप्स, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लंदन, 1961, पृ. 13

9. दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर, पुरातत्त्व मंदिर, पुरातत्त्व पुस्तक-1, अश्विन 1978 से आषाढ 1979, पृ. 1

10. महादेव देसाई की डायरी के 23 भाग अभी तक प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें महादेव देसाई के गांधीजी के निजी सचिव के रूप में कार्य करते हुए दैनिक कार्यों का विवरण अंकित है।

11. महादेव देसाई, *द स्टोरी ऑफ बारडोली- बीइंग ए हिस्ट्री ऑफ द बारडोली सत्याग्रह ऑफ 1928 एंड इट्स सिक्वल,* नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद, 1929; महादेव देसाई, *विथ गांधीजी इन सिलोन,* एस.जी. गनेशन पब्लिशर्स, मद्रास, 1928; महादेव देसाई, द *एपिक ऑफ ट्रावनकोर,* नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद, 1937; महादेव देसाई, 'ए

राईटियस स्ट्रगल' *ए क्रोनिकल ऑफ द अहमदाबाद टेक्सटाईल लेबरर्स फाईट फॉर जस्टिस,* नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1951.

12. दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर, पुरातत्त्व मंदिर, पुरातत्त्व पुस्तक-1, अश्विन 1978 से आषाढ 1979, पृ. 1
13. वही, पृ. 2
14. वही
15. मुनि जिनविजय, *एक भव-अनेक नाम,* संपा. माधव हाडा, वाग्देवी प्रकाशन, नोएडा, 2022, पृ. 246
16. 'पुरातत्त्व' 1920-21 से 1924-25 तक त्रैमासिक शोध पत्रिका के रूप में निकलने वाली पत्रिका थी जो गुजरात पुरातत्त्व मंदिर का प्रकाशन था। इस शोध पत्रिका में उक्त सभी विद्वानों के समय-समय पर शोध लेख प्रकाशित हुए।

सहायक प्राध्यापक
इतिहास एवं संस्कृति विभाग
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद